एक निष्ठावान सैनिक

एकांकी

डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव

नवसाहित्यकार प्रकाशन, नांदेड़

भूतपूर्व गृहमंत्री भारत सरकार

श्री.शंकरराव चव्हाण

के जीवन अंश पर आधारित सत्य किन्तु
कल्पना मिश्रित एकांकी नाटक

अनुक्रमणिका

अपनी बात ..

१५० सालों के गुलामी के बाद भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हो चूका था। किन्तु भारत अभी भी **५००** से अधिक रियासतों बंटा था। इसे एक भारत बनाना था। सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में वह कार्य पूरा किया गया। इसी रियासत में हैदराबाद रियासत थी। जिसका क्षेत्र महाराष्ट्र के मराठवाड़ा अंचल तक था। हैदराबाद में निजाम का शासन था। यहाँ का शासक निरंकुश बन गया था। उसने आम मुस्लिम एवं हिन्दू जनता पर अन्याय और अत्याचार किए। इसका नतीजा यह हुआ कि पीड़ित एवं त्रस्त हिन्दू-मुस्लिम जनता निजाम से मुक्ति चाहने लगी। इसी कारण मराठवाड़ा मुक्ति संग्राम शुरू हो गया था।

मराठवाड़ा में स्वामी रामानंद तीर्थ के नेतृत्व में आन्दोलन चल पड़ा था। इसी आन्दोलन में हजारों हिन्दू-मुस्लिम मुक्ति संग्राम के सैनिक शामिल हुए। इसी में थे भारत के पूर्व गृहमंत्री रह चुके श्री. शंकरराव चव्हाण। ‘वंदेमातरम्’ गीत गाये

जाने पर निजाम द्वारा प्रतिबन्ध लगाने के बाद, उसकी प्रतिक्रिया के रूप में आंदोलन के एक हिस्से के रूप में सक्रीय हो चुका था। जिसमें श्री. शंकरराव चव्हाण जी को नेतृत्व करने का मौका मिला था। उनके तत्कालीन कार्य से प्रसन्न होकर स्वामी रामानंद तीर्थ जी ने उन्हें एक निष्ठावान सैनिक के रूप में संबोधित किया। उन्हीं शंकरराव चव्हाण जी के जीवन अंश और उनके चारित्रिक विशेषताओं को सत्य और कल्पना के मिश्रण से एकांकी के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैं।

श्री. शंकरराव चव्हाण जी के जीवन से सम्बन्धित लिखें कई पुस्तकें पढ़ने, लोगों से चर्चा करने के बाद, ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर इस एकांकी की कथावस्तु का सृजन हुआ हैं।

डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव

पात्र परिचय :-

१.स्वामी रामानंद तीर्थ

- हैदराबाद मुक्ति आंदोलन का नेतृत्व

२.श्री.शंकरराव चव्हाण

- हैदराबाद मुक्ति आंदोलन एवं महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री

३.श्री.अशोकराव चव्हाण-पुत्र

४.सौ.अमिता चव्हाण-बहू

५.गोपाळ शास्त्री-मित्र

दृश्य -१

(मुख्यमंत्री श्री.शंकरराव चव्हाण का घर, घर की दीवार पर सत्य साईबाब, स्वामी रामानंद तीर्थ की बड़ी तसीर टंगी हैं। श्री.शंकरराव चव्हाण के बेटे श्री.अशोकराव चव्हाण और सौ.अमिता चव्हाण जी का विवाह हुए अभी केवल कुछ ही साल बीते हैं। बहू सौ.अमिता चव्हाण जी अपनी बेटी को कुछ खिला रही है। ऐसे में सफेद धोती-कुर्ता, जाकेट, गाँधी टोपी पहने बाहर से श्री.शंकरराव चव्हाण चव्हाण का प्रवेश होता हैं।)

श्री.शंकरराव चव्हाण :- (घर में आते ही सत्यसाईबाबा को प्रणाम करते हैं। श्री.शंकरराव चव्हाण जी की पोती अपने दादा को देखकर दादा-दादा कहती हुयी दौडकर आती। उसे गोद में लेते हुए।) अले...बाबा...हमारी पोती हमारा इन्तजार कर रही थी। हम भी इंतजार कर रहे थे कि आपको कब-

कब अपनी गोदी में लें। आओ हम कुर्सी पर बैठ कर दादा-पोती बातें करते हैं। (**कुर्सी पर बैठते हैं**।)

सौ.अमिता चव्हाण :- कब से रट लगा रही हैं, दादा कहाँ गये हैं ? मुझे दादा के पास ले जाओ।

श्री.शंकरराव चव्हाण :- अब हम आ गये है। मुझे देखकर उसे ख़ुशी होती हैं। और उसे इसे देखकर मुझे ख़ुशी होती है। चलो मैं तुम्हे एक गीत सुनाता हूँ। लकड़ी की काठी, काठी का घोड़ा, घोड़े की दूम पर जो मारा हथौड़ा, घोड़ा दौड़ा-दौड़ा दूम उठाकर दौड़ा।....ओ आपने तो हमारी धोती पर सू..सू कर दिया। (**जूठे हाथ से सिर के बाल खींचती हैं**।) अरे हमारे बाल...छोड़ो-छोड़ो भी ...दादा के बाल टूट जायेंगे ...तो आपके दादा टकले हो जाएँगे।

सौ.अमिता चव्हाण :- अरे दादा की धोती खराब कर दी ...और जूठे हाथों से बाल भी खिंच रही हो। बड़ी शरारती हो गई हैं।

लाओ इसे मुझे दो .. जरा मैं इसकी खबर लेती हूँ।

श्री.शंकरराव चव्हाण:- बहू...शरारत करने की उम्र में बच्चे शरारत नहीं करेंगे तो और कब करेंगे। यह उनका अधिकार हैं। उन्हें शरारत करने दो। और हां, मेरी पोती तो बिल्कुल मुझ पर गयी हैं। मैं भी बचपन में बहुत शरारती था। दोस्तों के साथ खूब मस्ती करता। झगड़े करता, हँसतामुस्कुराता, खेलता-कूदता...मैं अपने बचपन में अपने दोस्तों के साथ काँच की गोलियाँ गोटियाँ खेलता था। गिल्ली-डंडा, तैराकी, लुका-छिपी, खो-खो, कबड्डी, पतंग बाजी सारें खेल खेले है मैंने....आप भी मेरी पोती को शरारत करने देना उसे सारे खेल खेलने देना।

सौ.अमिता चव्हाण :- जी, नाना जी ! जरूर। मैं जरुर ऐसा ही करूँगी । ...यह आपकी धोती पर काली मिटटी का कैसा दाग हैं ? लगता हैं, आज भी आप खेत में काम कर के आयें हैं। नाना जी ! एक बात पुछू आप इस देश के

मुख्यमंत्री हैं और आप खेत में काम करते हैं। आपके तो इतने नौकर-चाकर हैं। जो खेत में काम कर सकते हैं। फिर भी आप स्वयं अपने हाथों से काम करते हैं।

श्री.शंकरराव चव्हाण :- बहू मुझे अपने देश और इस धरती की मिटटी से प्यार हैं। मैं चाहे जितना बड़ा हो जाऊं पर अपने खेतों से प्यार करना मैं नहीं छोड़ सकता। मैं जब संसद या जनता से रूबरू होता हूँ तो मेरे कपड़े सफेद और उज्वल होते हैं। मुझे उज्वल कपड़े पसंद हैं। उसकी उज्वलता और सफेदी अपने चरित्र की उज्वलता को अभिव्यक्त करती हैं किन्तु खेत की यह काली मिटटी जो धोती पर लगी हैं। यह सिर्फ मिटटी नहीं , यह मेरे धोती का शृगार हैं। इस काली मिटटी से मेरी धोती और भी उज्वल हो जाती हैं। इसकी खुशबू मुझे भीतर तक राहत देती हैं। हमारा देश किसानों का देश हैं। जो इस देश के लिए अपना खून-पसीना बहाकर अनाज उगाता हैं। मैं भी एक किसान हूँ। मैं अपना खून-

पसीना बहाकर अपना अनाज खुद उगाना चाहता हूँ। मुझे लगता हैं कि इस देश में सभी ने अपना अनाज खुद उगाना चाहिए। खेतों और किसानों के प्रति इस देश में प्रतिष्ठा की भावना उत्पन्न होना चाहिए।

सौ.अमिता चव्हाण :- नाना, आप सच में ही महान हैं। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली महसूस कर रही हूँ कि मुझे आपकी बहू बनने का सौभाग्य मिला। आपके विचार केवल विचार नहीं हैं। वे तो आचरण से उत्पन्न हैं। हमारे देश में नेताओं की प्रतिमा दोगली है। वे बोलते एक है और करते एक है। लेकिन आप के बारें में ऐसा नहीं हैं। आप जो बोलते हैं वो ही करते हैं। आपकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं हैं। इसीलिए आपका चरित्र हम सबके लिए अनुकरणीय है। आप यूँ ही आज लोकनेता नहीं बने हैं। जनता उसी को ही लोकनेता बनाती हैं, जो जनता के दुःख-दर्द को जनता में जाकर महसूस

करता हैं और उसे जमीनी तौर पर सुलझाता हैं।

श्री.शंकरराव चव्हाण :- बहू आप की वाणी में दिल जीत लेने की क्षमता हैं। आप मुबई के वातावरण में पली बड़ी। वहाँ का रहनसहन, वेशभूषा, भोजन आदि को आप ने छोड़कर यहाँ की संस्कृति, वेशभूषा,खान-पान को अपनाया। आपके स्वभाव में सहजता और सरलता हैं। आप में घुलमिल जाने की क्षमता हैं।

सौ.अमिता चव्हाण :- नाना आपने और सासू माँ ने मुझे कभी पराया समझा नहीं। मुझे आप अपने माँ-बाबूजी के जैसे लगते हो। शुरू-शुरू में मुझे कठिनाई हुई। मुझे मराठी नहीं आती है...यह जानकार आप मुझे अंग्रेजी में और सासू माँ मुझे हिंदी में बातें करती थी। मैं साड़ी नहीं पहनती थी। कभी मुझे आपने नहीं कहा कि यहाँ ऐसी वेशभूषा नहीं चलेगी....साड़ी पहनों। मुझे जो खाना पसंद था, वहीं खाना इस घर में मेरे लिए बनाया गया। मुझे चमचे से खाना पसंद था, तो सासू माँ मेरे खाने के

साथ चमच भी थाली में रख दिया करती थी। मैं आप लोगों के प्रेमस्नेह से इतनी अभिभूत हुई कि धीरे-धीरे मैंने साड़ी पहनना सिख लिया। सासू माँ सर पर पल्लू लिया करती थी। मैंने भी उसे सिख लिया था। यहाँ के भोजन,रहनसहन को अपना लिया। मराठी सिख ली। मुझे इस घर ने संस्कार और संस्कृति सिखायी हैं।

श्री.शंकरराव चव्हाण :- बहू, अशोक के साथ आपके विवाह से पूर्व मैं सत्य साईबाबा के पास गया था। उनसे आपके बारें में पूछा तो उन्होंने अशोक और आपकी जोड़ी को योग्य बताया और कहा कि बहू के कदम समृद्धि और यश लेकर आयेंगे। वह एक अच्छी बहु साबित होगी। वहीं हो रहा है और भविष्य में भी ऐसा ही होगा। मैं आपको और एक बात बताना चाहता हूँ। कुसुम अर्थात आपकी सासू माँ मेरी जीवन साथी। उसने मेरा हमेशा हर परिस्थिति में साथ दिया। सुख-दुःख की वह सहभागी रही। वह अखाड़ा बालापुर के माधवराव पाटिल की लड़की। सुंदर-

सुशिल, समझदार। बड़े घर में पली बड़ी। पिताजी ने बिना दहेज-मुहर्त और औपचरिकता को नहीं रखा था । उन्होंने सिर्फ अपने बेटे की पसंद और जोड़ी देखी। उन्होंने दहेज का विरोध करते हुए सक्त लहजे में कहा था। ङ्ग दहेज लेना और देना हमे कतई पसंद नहीं। दहेज के बदले हम लड़की या लड़के तय नहीं करना चाहते। आपकी लड़की ही हमारे लिए अनमोल दहेज हैं। शादी-ब्याह में आनेवाले मेहमानों की खाने-रहने की उत्तम व्यवस्था हो, बस इतनी ही अपेक्षा हैं। विवाह के बाद उसे मेरे विपरीत दिनों में प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करना पड़ा था। जब हम शादी के बाद हेदराबाद गये, तब मैं बाहर दूसरों को पढ़ाता था और दिन में कॉलेज करता और श्याम को घर लौटता। रात तक वकालत की पढाई करता। कम पैसों में घर चलाना पड़ रहा था। ऐसे वक्त कुसुम अपना काम खुद किया करती थी। वह बर्तन मांझना, खाना पकाना, कपड़े धोना, सार्वजनिक नल से पानी लाना। हम एक छोटे से कमरे में रहा करते थे। पर कभी उसने

इस बात की शिकायत नहीं की और नाहीं ही कभी इस बात का दुःख जताया। उसका जीवन निष्काम समर्पण से भरा हुआ हैं। वह सहज-सरल स्वभाव की हैं। उसमें गर्व-अहंकार नहीं हैं। मैं यही बात तुम्ह में देखता हूँ। तुम्ह भी अशोक का ऐसे ही खयाल रखना। सुख हो या दुःख हो, चाहे जैसी परिस्थितियाँ हो आप कभी अशोक का साथ नहीं छोड़ोंगी।

सौ.अमिता चव्हाण :- नाना आपका और माँ का चरित्र मेरे लिए अनुकरणीय हैं। मैं हमेशा आपकी बातों का खयाल रखूंगी। आपकी बहु से कभी आपको शिकायत का मौका नहीं मिलेगा।

(अन्तराल संगीत-दृश्य परिवर्तन)

दृश्य-२

(श्री.शंकरराव चव्हाण नीचे कालीन पर बैठे तबला बजा रहें हैं। बहू भीतर कुछ काम कर रही हैं।)

श्री.शंकरराव चव्हाण :- वाह..कितने दिनों बाद आज तबला बजाने का मौका मिला है। यह हाथ कबसे तबला बजाने के लिए तरस रहे थे। तबला बजाने से मेरा मन तरोताजा हो जाता है। **(बहू सौ.अमिता चव्हाण का आगमन)**

सौ.अमिता चव्हाण :- **(तालियाँ बजाते हुए)** वाह नाना, वाह ! आप जब भी तबला बजाते है, तब-तब मन के भीतर नई उर्जा, नई उमंग और उत्साह का जन्म होता है। ऐसे लगता है, बस आपके तबले से निकलने वाला मधुर संगीत बस सुनते रहे। मैंने सुना था, जहाँ संगीत होता है, वहाँ खुशियाँ होती है। आज महसूस कर रही हूँ। मैं फिर से कहना चाहती हूँ कि मैं भाग्यवान हूँ...जो आपके घर की बहू बनी। धन्यवाद

ईश्वर !ईश्वर ने मुझे कुछ मांगने के लिए कहा तो मैं उनसे यहीं मांगूगी कि मेरा जब दूसरा जन्म हो तो आपके घर हो।

श्री.शंकरराव चव्हाण :- बहू , आपके इस घर में आने से तो हम भी धन्य है। संगीत हमारे प्राण है। यह संगीत जातिधर्म, ऊँच-नीच के बन्धनों को तोड़कर सबको आनंद देता हैं। इस क्षेत्र में कोई भेद भाव नहीं होता है। संगीत भेद भाव करता भी नहीं है। इसीलिए संगीत मुझे बहुत पसंद हैं। यह संगीत जीवन को नई गति देता है। जीवन के प्रति निराश व्यक्ति में सकारात्मक उर्जा भर देता है। यह जो तबला है, जब भी मैं इसे बजाता हूँ। तो मुझे असीमित आनंद दे जाता है। मैं केवल तबला नहीं बजाता बल्कि अपने द्वारा बजाने से उत्पन्न होनेवाला संगीत सुनकर फिर से तरोताजा हो जाता हूँ।

सौ.अमिता चव्हाण :- नाना, संगीत तो मुझे भी बेहद पसद है किन्तु दुःख इस बात

का है कि मैं आप जैसा तबला नहीं बजा सकती।

श्री.शंकरराव चव्हाण :- इसमें दुःखी होने की क्या बात है बहू संगीत तो कोई भी कभी भी सिख सकता हैं। बस उसमें रूचि और सिखने की ललक होनी चाहिए। मुझ में यह रूचि बचपन में ही जाग गई थी। बचपन में मुझे संगीत और नाटक बेहद पसंद था। मैंने कई नाटक देखें, अनुभव किये, उन्हें पढ़ा। कई बार मन ही मन नाटक के रंगमंच पर अभिनय भी करता रहा। जैसे संगीत आनंददायक होता है वैसे ही नाटक देखना और पढ़ना भी आनंददायक होता हैं। वास्तव में यह जीवन ही नाटक का मंच है, यहाँ हर कोई अपना-अपना अभिनय करता है। और नाटक की कथावस्तु खत्म होने के बाद जैसे नाटक समाप्त हो जाता हैं वैसे ही जीवन की कथावस्तु भी समाप्त हो जाती है। यह नाटक बहुत कुछ सिखाता है; संदेश देता हैं। इसी नाटक से संगीत भी जुड़ा है। इसीलिए मुझे नाटक और संगीत बेहद पसंद हैं।

सौ.अमिता चव्हाण :- नाना आपके पास ज्ञान का भंडार है। आपके पास जो भी आता हैं। वह खाली हाथ कतई नहीं जाता है। आप की जबान से कभी कोई व्यर्थ शब्द नहीं निलते। जो भी निकलते है, वह कोई न कोई शिक्षा, ज्ञान देनेवाला जरूर होता है। आप इतने बढ़े है, जहाँ सबके लिए ज्ञान और गम्भीरता है; वहीं अपनी पोतियों के सामने बिलकुल बच्चे बन जाते हो। कोई गर्व और अहंकार आप में नहीं हैं। ... नाना... क्या आप गरमा-गर्म पकौड़े और चाय पीना पसंद करेंगे ?

श्री.शंकरराव चव्हाण :- **(हँसते हुए)** हाँ-हाँ जरूर बहू .. आपके हाथ के बने पकौड़े और चाय पीकर..अवश्य आनंद मिलेगा ।

सौ.अमिता चव्हाण :- बस कुछ ही मिनटों में मैं आपके लिए लेकर आयी। **(बहु भीतर चली जाती हैं।)**

श्री.शंकरराव चव्हाण :- हाँ क्यों नहीं ....। अशोक खुश नसीब है, जो उसे इतनी अच्छी पत्नी मिली हैं। ... **(कुछ गुनगुना रहे हैं। सहसा गाना शुरू कर देते हैं।)**

सुख से जायेंगे स्वर्ग को

कहता है कौन तुम्हे

यह बात लगती है छोटी

पर हृदय क्यों कापें

सुख से जायेंगे स्वर्ग को

सुख से जायेंगे स्वर्ग को

सौ.अमिता चव्हाण :- **(पकौड़े और चाय लेकर आती हैं।)** वाह, नाना आपको आज गाते हुए देखकर बड़ी ख़ुशी हो रही हैं। हमें कभी-कभी ही मौका मिलता हैं, आपसे ऐसे गीत सुनने का। नाना, आप जितने अच्छे तबला बजाते हैं, उतने ही अछे आप गाते भी है। यह लीजिये पकौड़े और चाय।

श्री.शंकरराव चव्हाण :- (पकौड़े खाते हुए) बहू, बहुत आच्छे पकौड़े बने है। खाकर यह जिव्हा और पेट आनंद से मुस्कुरा रहें हैं। और हाँ ... यह जो गीत अभी तुम्हने सुना है, यह गीत मुझे बहुत पसंद हैं। इस गीत की भी अपनी कहानी हैं। बचपन से ही मुझे गीत,संगीत नाटक के प्रति तो अभिरुचि थी ही, साथ में मेरे भीतर देशभक्ति राष्ट्र प्रेम की भावना भी जाग चुकी थी। यही कारण था कि मैं जब भी कोई सार्वजनिक उत्सव होता। जैसे गणेश उत्सव। मैं पैठण जब गणेश उत्सव में जाता तब वहाँ तबला के साथ यह गीत भी सुनाता था। जिस कारण लोगों में देशप्रेम की भावना जागें, संगठित हो। उस समय लोग इस गीत को बड़ा मन लगाकर सुनते थे। इस गीत को सुननेवालों की संख्या बहुत हुआ करती थी। इस गीत ने मेरी पसंद के साथ जनता को संगठित करने में बहुत बड़ा योगदान दिया हैं। इसीलिए यह गीत मुझे बहुत पसंद हैं। सुख से जायेंगे स्वर्ग को ... **(अन्तराल संगीत-दृश्य परिवर्तन)**

दृश्य-३

(श्री.शंकरराव चव्हाण चव्हाण अपने कक्ष में वन्देमातरम गीत सुन रहे है। सहसा उन्हें १९३८ में हुआ वन्देमातरम आन्दोलन याद आ जाता हैं। दृश्य फ़्लैशबैक में जाता हैं। १९३८ का हेदराबाद। हिन्दू छात्रावास एवं मंदिर के सामने छात्र श्री.शंकरराव चव्हाण अपने साथियों को सम्बोधित कर रहे हैं। श्री.शंकरराव चव्हाण जी का एकालाप - प्रकाश उन्हीं पर केन्द्रित हैं।)

श्री.शंकरराव चव्हाण :- (वन्देमातरम का नारा)वन्देमातरम ! (**साथियों की प्रतिक्रिया स्वरूप आवाज - वन्देमातरम**।) साथियों आज हम पर यह संकट की घड़ी है। हमे अपने ही देश में वन्देमातरम गाने से रोका जा रहा है। वन्देमातरम गीत तो धरती की वन्दना है। यह धरती हमारी माँ है। इसने हम सबको जन्म दिया है। इसने कभी कोई भेद भाव नहीं किया। जातिधर्म, ऊँच-नीच। वह तो हम सबको एक समान

प्रेम करती हैं। हमने उसका कई बार दिल दुखाया पर वह बदले में सिर्फ प्रेमममता, वात्सल्य लुटाती रही है। उसने हमें धन-धान्य, समृधि सबकुछ दिया। वह अपनी संतानों को परिश्रम करने पर रोटी, कपड़ा, मकान सबकुछ देती है। उस माँ की वन्दना का गीत गा लिया तो कौनसा गुना कर दिया। यह कट्टर निजाम बादशा वन्देमातरम को इस्लाम विरोधी बताता है। अपनी माँ का गुणगान करना भला किसी धर्म का विरोधी कैसे हो सकता है। यह सिर्फ उनका राजनैतिक ढ़कोसला है। कुछ लोग यह भी कहते है कि धरती पर हम पैर रखकर चलते है, भला माँ पर कौन पैर रखता है। इसीलिए वन्देमातरम इस्लाम विरोधी हैं। मैं उन्ही से पूछना चाहता हूँ कि जिस माँ की कौख में वे पल रहे थे। तब उसने अपनी माँ के पेट पर कितनी बार लात मारा था। उन्होंने अपनी ही माँ को लात मारी थी तो क्या वह अपनी माँ को माँ कहने से इंकार कर देंगे। साथियों हम अपनी माँ का गुणगान करनेवाले वन्देमातरम गीत गा रहे है। उस कट्टर

निजाम को नहीं गाना है, तो उसे कह दो मत गाओ। पर मैं उनहसे पूछना चाहता हूँ कि हमें अपनी माँ की वन्दना करने से रोकने वाले तुम कौन होते हो ? उन्होंने हम छात्रों के छात्रावास पर ताला लगा दिया है। अस्थाई तौर पर हमारा एडमिशन रद्द कर दिया है। उन्हें लगता है कि हम इस से घबराकर वन्देमातरम गाना छोड़ देंगे। तो यह उनकी गलत फहमी होगी। हम पर चाहे जितने भी संकट आये पर साथियों हम सब आज इस स्थान पर प्रण लेते है कि हम अपनी माँ की वन्दना करनेवाल गीत वंदेमातरम् अपनी आखरी साँस तक गाते रहेंगे। चाहे हमे बलिदान क्यों न देना पड़े। तो साथियों मेरे साथ बोलो .....वन्देमातरम

(तीन बार ललकार होती है और तीन बार उनके साथी प्रतिक्रिया स्वरूप वन्देमातरम कहते हैं। (फ्लैशबैक से वापस आते हैं ... वही वन्देमातरम गीत चल रहा है।)

(मंच पर धीरे-धीरे अँधेरा होता हैं। दृश्य परिवर्तन)

दृश्य -४

(श्री.शंकरराव चव्हाण अपने कक्ष में दीवार पर टंगी स्वामी रामानंद तीर्थ की प्रतिमा को देख रहे है। पूर्वदीप्ति में जाते हैं। स्वामी रामानंद तीर्थ का कक्ष।)

श्री.शंकरराव चव्हाण : (घोड़े के टापों की आवाज। घोड़े पर संवार होकर श्री.शंकरराव चव्हाण आते है।) प्रणाम स्वामी जी !

स्वामी जी : आईये शंकर जी, मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था। आईये बैठिये। (**श्री.शंकरराव चव्हाण कुर्सी पर बैठते है।)** शंकर जी, मैंने आपको यहाँ एक विशेष उद्देश्य से बुलाया है। आप मेरे प्रिय स्वाधीनता सैनिकों में से एक हो। आपमें नेतृत्व की क्षमता है। ...यहाँ हिन्दुओं पर निजामों का अत्याचार लगातार बढ़ते जा रहा है। हमारी स्त्रियाँ भी सुरक्षित नहीं है। और हमें हमारी भूमि मराठवाडा को निजामों के चंगुल से मुक्त करना भी हैं। यहाँ हम संगठित नहीं है।

हमारे सैनिक कम पढ़ रहे है। निजामों के इस कुशासन में हम अपने मकसद को पूरा नहीं कर पा रहे है। हमे पूरी तरह से संगठित होकर निजामों को हमारी भूमि से खदेड़ना होगा। हमें निजामों के सीमा से बाहर जाकर हमारे सैनिकों को संगठित करना और लोगों में जागृति लानी होगी। तुम्हे अभी इसी कार्य के लिए रवाना होना है। तुम उमरखेड कैंप जाओ वह निजामो की सीमा के बाहर है। वहाँ तुम सैनिकों को संगठित कर सकते हो। और हाँ..हमे हमारी युद्धनीति में भी बदलाव लाना होगा। हमें छत्रपति शिवाजी महाराज के छापामार युद्ध नीति का भी प्रयोग करना होगा। अब तुम शीघ्राती-शीघ्र जाओ ..देर न होने पाये ...।

श्री.शंकरराव चव्हाण :- जी स्वामी जी ! अभी निकलता हूँ। **(घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ते है। घोड़े के टापों की आवाज।) (समय बीतने का संगीत।)**

श्री.शंकरराव चव्हाण :- साथियों वन्देमातरम! आज स्वामी जी के आदेशानुसार हमने एक हजार स्वाधीनता सैनिकों को एकत्रित किया हैं। जो इस मातृभूमि के लिए मरमिटने के लिए तैयार है। हमने पिछले कुछ महीनों से आधी रात में छिप-छिपकर गाँव-गाँव जाकर निजामों के विरुद्ध जाग्रति की है। हमने प्रत्येक क्रन्तिकारी कैपों को आपस में जोड़ा है। हमने हमारे सैनिको को सभी प्रकार की युद्धनीति सिखायी है। छापामार युद्ध नीति में पारंगत किया है। गोली, बन्दूक, बारूद से खेलना सिखाया है। आज आप सब पूरी तरह से तैयार हो गये हो। साथियों निजामों का अत्याचार लगातार बढ़ते जा रहा है। हमें हमारी भूमि को निजामों से मुक्ति दिलाने का समय आ चूका है। हमारी मदद के लिए अन्य कैंप से सहयोगी सैना भेजी जा रही है। वह सैना हमे निजाम सरहद के पास मिल जायेगी। हमे आज ही निजामों के एक लश्करी स्थल पर आक्रमण करना है। साथियों आज निश्चित करलों लौटेंगे तो जीतकर ही। मेरे साथ बोलों वन्देमातरम!(**सभी एक साथ प्रतिक्रिया**

देते है-वन्देमातरम) (समय बीतने का संगीत।)(घोड़े के टापों की आवाज। श्री.शंकरराव चव्हाण के मित्र गोपाल घोड़े पर सवार होकर आ रहे है।)

गोपाल :- (घोड़े से उतर कर हाँफते हुए।) दादा..दादा !गजब हो गया।

श्री.शंकरराव चव्हाण :- क्या हुआ गोपाल। इतने घबराये हुए क्यों हो?

गोपाल : दादा, गजब हो गया। हमारी सैना की मदद के लिए आनेवाली सहयोगी सैना नहीं आनेवाली है। **श्री.शंकरराव चव्हाण** : **(दुःखी संगीत)** क्या कहा ... यह नहीं हो सकता। सहयोगी सैना नहीं आनेवाली है। मुझे विश्वास नहीं हो रहा है। उन्होंने वादा किया था। वो वादा कैसा तोड़ सकते है। हे भगवान ! अब क्या होगा। ...अबतक सैना निजाम सीमा में पहुंच चुकी होगी। वह तो इस आशा में होंगे कि हमारे पीछे सहयोगी सैना आ रही है। .. बिना सहयोगी सैना के हमारी सैना निजाम सैना के सम्मुख कमजोर पढ़ जायेगी। यह तो

उन्हें मौत की खायी में भेजे जैसा है। मुझे उन्हें जाकर इसी वक्त रोकना होगा। गोपाल अपना घोड़ा दो।

(श्री.शंकरराव चव्हाण घोड़े पर सवार होते है और निकल पड़ते है। घोड़े के टापों की आवाज।) (रहस्यमयी रोमाचित संगीत)

श्री.शंकरराव चव्हाण : (मार्ग में नदी लगती है।नदी में बहने वाले पानी की आवाज।) इस जंगल की नदी तो पानी से लबालब भरी हुई है। इसे मैं कैसे पार कर पाऊँगा। इसे पार करना तो असम्भव है। पार तो करना ही होगा। मेरे एक हजार भाईयों की जान खतरे में है। मैं इस नदी को भयभीत होकर यहाँ हाथ पर हाथ धरा नहीं बैठ सकता। मुझे किसी भी हालत में इस नदी को पार करना ही होगा। **(नदी में कूदने की आवाज।)** यहाँ कोई लकड़ी तैर रही है इसे पकड़कर नदी पार करना आसान होगा। हाँ.. यह पकड़ लिया .. अरे यह तो लड़की नहीं सांप है। हे... **(फेंकते है।) (तैरने की आवाज)** नदी पार हो गई। **(दौड़ने की आवाज)** वह रही सैना

.. रुक जाओ .... रुक जाओ ... (**समय बीतने वाला संगीत**)

श्री.शंकरराव चव्हाण :- (**घोड़े के टापों की आवाज ..**) प्रणाम स्वामी जी ! वन्देमातरम!

स्वामी जी : वन्देमातरम शंकर जी ! शंकर तुम बहाद्दुर हो। मैं तुम्हारे कार्य से बेहद प्रसन्न हूँ। तुमने अपनी जान पर खेलकर और समय की आवश्यकता को समझकर हमारे एक हजार सैनिकों की जान बचाई है। शंकर जी यह लड़ाई अभी यहाँ रुकी नहीं है। यह तो शुरुआत है.. लगातार जारी रहेगी। मैंने आपके आधीन किये गये संगठन के कारनामें सुने हैं। आप ने हदगांव और नांदेड़ में निजामों को कैसे सबक सिखाया हैं। तुम इस मुक्ति संग्राम के मात्र एक सैनिक नहीं हो बल्कि एक निष्ठावान सैनिक हो।

श्री.अशोकराव चव्हाण :- नाना स्वामी रामानंद तीर्थ की प्रतिमा की और ऐसे क्या देख रहे हो ? मुझे लगता है, आपको पुराने दिन याद आगये।

श्री.शंकरराव चव्हाण :- अशोक बेटा, आप कब आये ? मैं पुरानी यादों में खो गया था ..सबकुछ अभी नजरों के सामने घटित हुआ-सा लगता है। चलो छोड़ो ..आज आपके पास फुर्सत हो तो फुटबोल खेलने चलें।

श्री.अशोकराव चव्हाण :- हाँ क्यों नहीं... पर नाना, हार जाओगे मुझसे ..

श्री.शंकरराव चव्हाण : **(हँसते हुए)** चलो देखते है। कौन जीतता हैं ? आज अपने नाना को हरा कर दिखना। **(दोनों हँसते हैं।) ...**

(संगीत के साथ एकांकी समाप्त।)

समीक्षा

१.एक निष्ठावान सैनिक : सफल चित्रण

लेखक डॉ. सुनील जाधव की 'एक निष्ठावान सैनिक' यह यथार्थवादी एकांकी है। देश के भूतपूर्व गृहमंत्री शंकररावजी चव्हान के जीवन पर लिखी गयी है। चार दृश्य में और पांच पात्रों को लेकर लिखी इस रचना में सच्चे निष्ठावान व्यक्ति का जीवनअंश चित्रित हुआ है। हिंदी में शायद यह प्रथम प्रयास है कि, 'मराठवाडा मुक्ति संग्राम' में अपना योगदान देनेवाले व्यक्ति के जीवन पर एकांकी लिखी गयी है। लेखक बड़े ही सहज और सफल रूप से संवादों का उपयोग करते है। लेखक का इस एकांकी लिखने के पीछे शंकररावजी के 'स्वाधीनता आन्दोलन' में दिए हुए योगदान को रेखांकित करना यह एक मुख्य उद्देश्य रहा होगा। इस एकांकी के नायक 'शंकररावजी' है। एकांकी को पढने से हम उनके पारिवारिक जीवन को समझ लेते ही है। साथ ही उनके सामाजिक जीवन चरित्र को भी समझ लेते है। एकांकी में एक मुख्यमंत्री की घर में आने के

बाद अपनी नाती के साथ बच्चा बनने की भूमिका पाठकों मोहित करती है।

लेखक ने दिया हुआ शीर्षक 'एक निष्ठावान सैनिक' सार्थक तब लगता है, जब एकांकी को पढकर समाप्त करते है। इस एकांकी का प्रभावी पात्र शंकररावजी पाठकों के मन में अपनी जगह निर्माण करता है। उनका रहन-सहन सीधा-साधा है, बचपन में वह आम बच्चों की तरह ही शरारत करते थे। साथ ही सभी खेल जो बच्चों ने उस उम्र में खेलन चाहिए वे वह खेलते थे। राज्य के मुख्यमंत्री होकर भी वह अपने मिट्टी से जुड़े हुए दिखाई देते है। एकांकी में धोती में लगा हुआ काला दाग उनके व्दारा खेती में काम करने का प्रमाण देता है। जिससे पाठक समझ जाते हैं कि, शंकररावजी को खेती में काम करना और उन्हें किसान बनकर रहना पसंद था। उनका कहना था कि, हर किसीने अपने जरूरत की चीजें स्वयं उगानी चाहिए। शंकररावजी के चारित्रिक विशेषताओं में साहसिकता, वीरता, नेतृत्व क्षमता, पारिवारिक सामजस्य, संगीत प्रेमी, अपनी मिट्टी से प्रेम, राष्ट्रभक्ति, वैचारिकता, उदारता, संघर्षशीलता आदि को देखते हुए हर कोई उनके चरित्र से

प्रभावित हो जाता है। लेखक ने अपने लेखन कौशल्य के माध्यम से इस रचना को संवादों के माध्यम से उत्कृष्ट बनाने का प्रयास किया है। जैसे एक संवाद मुझे बहुत प्रभावित करता है, ''यह मिट्टी नहीं, यह मेरे धोती का शृंगार है। इस काली मिट्टी से मेरी धोती और भी उज्जव हो जाती है।'' आज के वर्तमान राजनेताओं की तुलना में शंकररावजी का नेतृत्व अलग और प्रभावी था। वे जैसा बोलते है, वैसा करने में अपनी क्षमता रखते है। उन्हें अपने जमीन (मिट्टी) से प्यार है। किसानों की वह इज्जत करते है। स्वयं को वह किसान मानते है। मुख्यमंत्री होकर भी स्वयं को 'किसान' बताना ही उनकी महानता का सूचक है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी शंकररावजी किसानों के हितचिंतक है, दहेज लेने और देने के विरोध में उनके विचार है। उन्होंने बिना दहेज लिए अखाड़ा बालापुर के माधवराव पाटिल की सुपुत्री कुसुमदेवी से शादी की थी। विवाह के बाद अभावों में दिन भी वे गुजारतें है। कम पैसों में घर चलाना, दिन में काम और रात में वकालत की पढाई करना। यह उनके संघर्ष से भरे दिन थे। जिससे पाठक वर्ग उनके व्यक्तित्व से आकर्षित हुए बगैर नहीं रहता। अपने 'बहु' के लिए भी आदरयुक्त शब्दों का प्रयोग करते

है। सहीं मायने में शंकररावजी का जीवन अनुकरणीय है। समाज के हर वर्ग के लिए, हर उम्र के व्यक्ति के लिए उनका जीवन प्रेरणादायक है। यह लेखक की उपलब्धि है कि, उन्होंने अपने शब्दों व्दारा शंकररावजी का चरित्र पाठकों के सामने प्रखर और स्पष्ट रूप से चित्रित किया है।

रचना में फ्लैशबैक शैली का प्रयोग हुआ है। पाठक पढ़ते-पढ़ते १९३८ के स्वाधीनता आन्दोलन में चले जाते हैं। जिसमें ‘वन्दे मातरम’ की घोषणा पर पाबंदी लगायी थी। इसके विरोध में वे आन्दोलन करते है। उनके इस आन्दोलन और ‘वन्दे मातरम’ की गान का महत्त्व भी इसमें पढ़ते है। शंकररावजी के छात्र जीवन की घटनाओं को हम पढ़ते हैं। अपने राष्ट्रभक्ति के चलते वे वहां लोगों में नव चेतना जागृत करते हैं। रचना में स्वामी रामानंद के मार्गदर्शन पर वे गाँव-तबकों में स्वाधीनता आन्दोलन के लिए कार्यकर्ताओं को जागृत और एकत्रित करने का कार्य भी करते हैं। शंकररावजी ने अपनी जान की परवाह किये बिना अपने एक हजार स्वाधीनता आन्दोलन के कार्यकर्ताओं की जान बचायी थी। इसमें उनकी समय-सूचकता, योग्य समय पर निर्णय

लेने की क्षमता दिखाई देती है। उनके इसी कार्य से प्रसन्न होकर स्वामीजी उन्हें 'एक निष्ठावान सैनिक' की उपाधि देते है।

यह एकांकी इसलिए पढना चाहिए कि, इसमें शंकररावजी के जीवन का चित्रण है, उनका स्वाधीनता आन्दोलन में योगदान है, उनके पारिवारिक जीवन का चित्रण भी पढने को मिलता है। उनका चरित्र, परिवार, उनका सामाजिक कार्य, आदोलन में उनका नेतृत्व आदि पढ़ते हैं। पाठक वर्ग यह रचना पढकर संतुष्ठ नहीं हो पाता बल्कि, शंकररावजी के जीवन के बारें में और जानने के लिए वह तैयार होता है। शंकररावजी के संपूर्ण जीवन का चित्रण और स्वाधीनता आन्दोलन वर्णन विस्तृत आना चाहिए। किन्तु रचना की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए लेखक ने अपना कार्य बहुरूपी किया है। निश्चित ही यह रचना पाठकों के लिए प्रेरणादायक और स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में रूचि रखनेवालों के लिए उपयोगी साबित होगी। पाठकों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाली रचना है।

डॉ.वर्षा मोरे

२.एक निष्ठावान सैनिक : एक समीक्षा

एक निष्ठावान सैनिक एकांकी की रचना डॉ. सुनील जाधव जी ने की है। डॉ. सुनील जाधव जी का जन्म महाराष्ट्र के मराठवाड़ा के नांदेड़ जिले के मुदखेड तहसील में हुआ। यह एकांकी महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री व भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री श्री शंकरराव चव्हाण जी के जीवन अंश पर आधारित सत्य घटना है। इस एकांकी के अंतर्गत श्री शंकरराव चव्हाण का अपने देश, अपने राज्य व अपने समाज को लेकर जो निष्ठा व प्रेम है उसी देश प्रेम को लेखक ने अपनी लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। मराठवाड़ा मुक्ति संग्राम में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले श्री शंकरराव चव्हाण जी इस एकांकी के प्रमुख पात्र हैं। यह एकांकी चार दृश्यों में विभक्त है। इस एकांकी के अंतर्गत पांच पात्रों का समावेश है। लेखक महोदय ने बड़ी ही सहजता और सजीवता के साथ संवादों को प्रस्तुत किया है। इस एकांकी का प्रमुख उद्देश्य श्री शंकरराव चव्हाण जी के जीवन चरित्र के विविध पहलुओं को उजागर करना है। शंकरराव चव्हाण जी के घर की दीवारों पर सत्य साई बाबा व स्वामी रामानंद तीर्थ की

तस्वीर (छायाप्रति) टंगी हुई है, जिसे देखकर सकारात्मकता का जीवंत उदाहरण प्राप्त होता है।

एकांकी की शुरुआत श्री शंकरराव चव्हाण जी के घर में प्रवेश करते ही सत्य साई बाबा को प्रणाम करने से है। अपनी पोती के प्रति अत्यंत स्नेह है। उसके बाल मन के अनुरूप अपने आपको ढाल लेना और अपनी पोती के हम उम्र साथी बनकर खेलना पाठकों के मन को आकर्षित करता है। वह भी अपने बचपन को याद करते हुए अपनी बहू अमिता से अपनी पोती के लिए कहते हैं कि इसे खूब शरारत करने देना, सारे खेल खेलने देना। शंकरराव चव्हाण जी एक राज्य के मुख्यमंत्री होते हुए भी अपने खेतों में स्वयं कार्य करते हैं। इतने ऊंचे पद पर विराजित होते हुए भी वह सदैव अपने जमीन से जुड़े रहे हैं। वह अपने खेत में स्वयं खेती करते हैं और फसल उगाते हैं। उन्हें गर्व है कि वह एक किसान हैं तभी तो उनकी धोती में लगी काली मिट्टी उनके आवरण को सुशोभित करती हैं। धोती में लगी काली मिट्टी चव्हाण जी को सम्मान के रूप में प्रतीत होती हैं क्योंकि वह एक किसान हैं और किसान सदैव अपनी धरती मां से अत्यधिक प्रेम करता है। इतने बड़े मंत्री होते हुए भी अपने

आपको किसान कहना उनकी विनम्रता को स्पष्ट करता है। वह प्रत्येक किसान से लगाव रखते हैं। शंकरराव चव्हाण जी का व्यक्तित्व विविध सद्गुणों से परिपूर्ण है, जैसे निडरता, वीरता, राष्ट्रभक्ति, कृतज्ञता, उदारता, नेतृत्व क्षमता, संगीत प्रेमी, संघर्षशील, पराक्रमी, परिवार में सामंजस्य बनाना, सभी के प्रति दया भाव रखना, किसी का नुकसान ना होने देना आदि सभी चरित्र की विशेषताएं पाठकों के मन को प्रभावित करती हैं। अपनी बहू को सम्मान व स्नेह पूर्वक बात करना। बहू को सामंजस्य पूर्ण जीवन जीने की सलाह देना। अपनी पत्नी कुसुम के निष्काम समर्पण का उदाहरण देकर अपनी बहू अमिता को समझाते हैं कि अशोक का कभी साथ मत छोड़ना उसके हर परिस्थिति में साथ खड़े रहना।

प्रारंभ से ही लेखक महोदय द्वारा दिया हुआ शीर्षक एक निष्ठावान सैनिक सार्थक लगता है। शंकरराव चव्हाण जी का व्यक्तित्व प्रभावी है क्योंकि प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिए उनका जीवन प्रेरणादाई है। लेखक ने संवादों के माध्यम से एकांकी में सजीवता का प्रतिपादन किया है। जिससे शंकरराव चव्हाण जी का व्यक्तित्व और भी निखर कर प्रस्तुत हुआ है। इस छोटी सी एकांकी में लेखक ने

विविध आयामों को प्रस्तुत किया है, जिससे एकांकी एक उत्कृष्ट श्रेणी में आ जाती है। यह एकांकी एक व्यक्ति के जीवन चरित्र को दर्शाती है। लेखक ने इस एकांकी में फ्लैशबैक शैली का प्रयोग किया है। इस एकांकी को पढ़ते-पढ़ते पाठक वर्ग १९३८ के स्वाधीनता आंदोलन में चले जाते हैं। जिसमें वंदे मातरम की घोषणा पर पाबंदी लगाई गई थी। इसके विरोध में चव्हाण जी आंदोलन करते हैं। उनके इस आंदोलन और वंदे मातरम राष्ट्रीय गीत के महत्व को भी लेखक ने बखूबी स्पष्ट किया है। स्वामी रामानंद के मार्गदर्शन पर वे गांव-गांव जाकर स्वाधीनता आंदोलन के लिए लोगों को जागृत और एकत्रित करने का कार्य भी किया है। वह अपनी जीवन की परवाह किए बिना अपने एक हजार स्वाधीनता आंदोलन के सैनिकों की जान बचाई थी। इसमें उनके सही समय पर निर्णय लेने की क्षमता दिखाई देती है जिससे स्वामी जी ने प्रसन्न होकर उन्हें एक निष्ठावान सैनिक का उपनाम दिया।

इस एकांकी का प्रमुख केंद्र-बिंदु शंकरराव जी का जीवन चरित्र है, जिन्होंने अपने स्वाधीनता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिन्होंने निजामों की सीमा से बाहर जाकर सैनिकों को संगठित करना और

लोगों के बीच में जागरण की क्रांति लाना उनका ध्येय रहा है। शंकरराव चव्हाण एक सच्चे सेनानी के साथ-साथ एक सच्चे दिशादर्शक भी थे। उन्होंने सामान्य जनता के भीतर अपनी स्वाधीनता के लिए उद्बोधक शब्दों के माध्यम से जागृति व नव चेतना की नींव डाली। यह एकांकी संक्षिप्त व सारगर्भित है। पाठक अनायास ही इस एकांकी को पढ़ने के लिए आकर्षित होते हैं क्योंकि एकांकी का शीर्षक एक निष्ठावान सैनिक सार्थकता से परिपूर्ण है। जिसको पढ़ते-पढ़ते शंकरराव जी के जीवन के बारे में और जानने की इच्छा जागृत होती है। इस प्रकार शंकरराव चव्हाण जी का संपूर्ण जीवन चरित्र और स्वाधीनता आंदोलन का वर्णन पाठक वर्ग के लिए प्रेरणादाई और उपयोगी सिद्ध है।

प्रीती यादव

लेखक परिचय

डॉ.सुनील जाधव जी का जन्म 01 सितम्बर, १९७८ में अपने ननिहाल जिला नांदेड के तहसील मुदखेड में हुआ। पिता गुलाबसिंग एवं माता का नाम शकुंतलाबाई हैं। अनिल बड़े भाई और संदीप तथा राजेश दो छोटे भाई हैं। उनका विवाह माजलगाव के शिक्षा अधिकारी परशुराम राठोड की सुपुत्री वैशाली से २००८ में सम्पन्न हुआ। उन्हें तनिष्का एवं तन्मय दो संतान हैं। आपकी प्राथमिक शिक्षा हादगांव तो माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कॉस्मोपालीटन, स्नातक शिक्षा सरस्वती विद्या मंदिर महाविद्यालय, किनवट में हुई।एम्. ए. हिंदी में नांदेड के पीपल्स कॉलेज से तो पीएचडी की उपाधि स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय से प्राप्त की । यू.जी.सी. से प्राध्यापक पात्रता परीक्षा नेट।

साहित्यिक परिचय :

कविता संकलन :- १.मैं बंजारा हूँ २.सच बोलने की भूल ३.मेरे भीतर मैं ४.रौशनी की ओर बढ़ते कदम ५.त्रिधारा। **कहानी संकलन** :- १. मैं भी इंसान हूँ २. एक कहानी ऐसी भी

३.गोधड़ी। **एकांकी :-**१.भ्रूण २. कैंची और बंदूक, ३.एक निष्ठावान सैनिक। **एकांकी संकलन**–अमरबेल एवं अन्य एकांकी, **नाटक**–तालाबंदी के वे दिन **अनुवाद**: सच का एक टुकड़ा (नाटक) **समीक्षा/आलोचना :-** १.नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य २.हिंदी साहित्य विविध आयाम ३.दलित साहित्य विविध आयाम ४.अंतरजाल की दुनिया ५.रत्नकुमार सामरिया के नाटक

पुरस्कार :-१.मैं वर्ण और वर्णनातीत कविता को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरशियस का प्रथम अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार। २.'कैंची और बंदूक' एकांकी को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरशियस का तृतीय अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार।

सम्प्रति :- हिंदी विभाग, यशवंत महाविद्यालय, नांदेड

पता:- महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड ४३१६०५, मोबाईल :-९४०५३८४६७२